



एक ही बाग़ के फूल-1

“हमारे घर के सामने एक नए किरायेदार आये. उस परिवार की माँ और बेटी दोनों मस्त माल थी. लेकिन मेरी नजर उनकी कमसिन बेटी पर थी मैं उस पर ट्राई मारने लगा. ...”

Story By: (veerudada33)

Posted: Monday, November 25th, 2019

Categories: [हिंदी सेक्स स्टोरी](#)

Online version: [एक ही बाग़ के फूल-1](#)

एक ही बाग़ के फूल-1

❓ यह कहानी सुनें

दोस्तो, कैसे हो आप सब लोग !

आपने मेरी पिछली कहानी

दो जवान बहनें और साथ में भाभी

पढ़ी होंगी. मुझे उसके काफी सारे मेल भी आये, जिनके लिए मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ।

दर्द को दर्द से देखो

दर्द को भी दर्द होता है

दर्द को भी जरूरत होती है प्यार की

आखिर प्यार में दर्द ही तो हमदर्द होता है !

तो दोस्तो, अब आते हैं इस नयी कहानी पर ! यह कहानी अभी कुछ समय पहले की है.

हमारे घर के सामने एक नए किरायेदार आये थे। वो गढ़वाल के रहने वाले थे। उनके परिवार में पति रमेश, पत्नी गीता, एक बेटा मोनू और एक बेटी छाया। काफी दिन हो गए थे इसलिए हमारे घर से उनकी अच्छी जान पहचान हो गयी थी। हमारे घर आना जाना लगा रहता था।

उनकी बेटी छाया और कभी गीता खुद मेरे पास आकर बैठ जाती थी, जब मैं अपने कंप्यूटर पे काम करता था या उनको कुछ काम होता था तो। इसी बहाने मैं दोनों की कभी पीठ तो कभी जांघों पे हाथ रख देता और थोड़ा सहला देता। छाया मुझे भइया कहती थी।

एक बार छाया आई और मेरे बगल में बैठ गयी, उसको नयी फिल्म के गाने चाहिए थे। मैंने उसकी बायीं जांघ पर कीबोर्ड रख दिया और दायीं जांघ पे कोहनी और कहा- अब तू टाइप कर।

उसने शॉर्ट्स और टॉप पहना हुआ था।

वो टाइप करने लगी, बहुत आराम आराम से टाइप कर रही थी। मैंने अपनी कोहनी सीधी की जो उसकी कमर पास पहुंच गयी. जहाँ से उसने शॉर्ट्स पहना हुआ था, उसके थोड़ा ऊपर उसका नंगा पेट था क्योंकि टॉप छोटा था, जैसे उसकी नाभि को आधा ढका हुआ था।

टॉप का गला भी काफी बड़ा था जिससे मालूम चल रहा था उसने ब्रा नहीं पहनी। वैसे भी उसकी चूचियाँ अभी ज्यादा बड़ी नहीं थी।

ये सब महसूस करके मेरा लंड खड़ा हो गया जो लोअर में थोड़ा दिखाई भी दे रहा था।

मैंने उसके पेट पे चूटी काट ली। उसने 'आआ' की हल्की आवाज की और कहा- क्या भइया ... लिखने भी दो।

फिर वो लिखने लगी.

फिर मैंने दोबारा चूटी काटी.

इस बार उसने मेरे हाथ चपत लगाई कहा- मान जाओ भइया।

फिर कुछ देर बाद मैंने फिर से चुंटी काटी.

'अह्ह ...' की आवाज करके मेरी तरफ देख के मुंह बना लिया। मैंने शायद इस बार तेज़ चूँटी काट ली थी इसलिए वो खुद अपने पेट पे सहलाने लगी।

मैंने कहा- ज्यादा तेज़ काट ली क्या ?

और कह के उसके पेट पे सहलाने लगा।

उसने अपना हाथ हटा लिया, मैं उसके पेट पे आगे भी सहलाने लगा.

उसने कहा- क्या भइया, क्या है आपको ?

मैंने कहा- तेरी स्किन (त्वचा) कितनी सॉफ्ट (मुलायम) है.

और यह कह के और भी अच्छे से सहलाने लगा ।

वो बार बार गलती कर रही थी लिखने में तो मैंने अपनी कुर्सी हल्की पीछे की और कहा- यहाँ आकर लिख । वो मेरी तरफ पीठ करके लिखने लगी. उसकी नंगी कमर और गोल गोल गांड मेरे सामने थी.

तभी उससे कुछ गलती हुयी और वो साइड में थोड़ा हट के मुझसे पूछने लगी । अभी भी वो कंप्यूटर के सामने थी तो मैंने उसकी नंगी कमर पे अपने दोनों हाथ रख दिए और उसे साइड हटा के ठीक किया ।

फिर वो दोबारा लिखने लगी ।

मैंने हाथ थोड़ी देर में हटाया, फिर से आवाज आई- भइया, फिर से गलत हो गया ।

मैंने देर न करते हुए फिर से वैसा ही किया पर इस बार उसे साइड हटा के एक हाथ उसकी गांड की गोलाइयों पे रख दिया । नर्म नर्म गांड का सपर्श पाकर मेरा लंड पूरा खड़ा हो गया ।

मैं एक हाथ से कीबोर्ड चला रहा था और दूसरा हाथ उसकी गांड पे था । गलती ठीक करके मैंने उसकी गांड हल्के से मसल दी ।

लिखते लिखते उसने कहा- भइया मुझे भी कंप्यूटर चलाना सिखा दो ।

मैंने कहा- सिखा दूंगा ।

मैं अभी भी उसकी गांड सहला रहा था ।

उससे फिर से गलती हुयी ।

मैंने कहा- एक काम कर ... मेरी गोद में बैठ जा ।

वो मेरी जांघों पे बैठ गयी।

तो मेरा हाथ कीबोर्ड पे नहीं पहुंच रहा था। मैंने कहा- ऊपर होकर ठीक से बैठ जा।
वो ऊपर होकर मेरी गोद में बैठ गयी लेकिन बैठते ही उसे मेरे मोटे खड़े लंड का आभास हो गया।

पर उसने कहा- ये क्या है भइया ?

मैंने कहा- कुछ नहीं, तू अपना काम कर।

वो फिर से टाइपिंग करने लगी और मैं नंगी कमर और हल्का टॉप के अंदर भी हाथ डाल सहलाने लगा। मेरा लंड बिल्कुल टाइट हो गया।

मैंने उससे पूछा- तेरा कोई बॉयफ्रेंड है ?

उसने कहा- नहीं।

मैंने पूछा- सच में कोई बॉयफ्रेंड नहीं है ?

उसने कहा- हां सच में कोई नहीं है।

मैंने कहा- यार तू इतनी सुंदर है और इतनी सेक्सी भी है कोई न कोई तो होगा ही ?

उसने कहा- हां एक लड़का है. वो कहता है कि वो मुझे पसंद करता है।

मैंने पूछा- और क्या क्या कहता और करता है ?

उसने कहा- वो कहता है कि मैं दिन पे दिन मस्त होती जा रही हूँ।

“और कुछ करता भी है ?” मैंने पूछा।

“हां कभी कभी पीछे चपत लगाता है आराम से तो कभी जांघों पे हाथ रख के सहलाता है।”

मैंने उसकी जांघों पे हाथ रख के सहलाया और पूछा- ऐसे करता है वो ?

उसने कहा- हां ... पर उस टाइम स्कूल ड्रेस में होती हूँ तो स्कर्ट पहने हुए होती हूँ न तो

बैठते वक़्त स्कर्ट घुटनों से ऊपर हो जाती है तो वहीं वो हाथ लगाता है।

तभी उसकी माँ ने आवाज़ लगाई और वो जाने लगी।

मैंने उससे कहा- कल स्कर्ट पहन आना!

और जाते जाते उसकी गांड पे चपत लगा दी।

लण्ड मेरा खड़ा हो चुका था तो मुठ मार के शांत किया पर रात को साढ़े ग्यारह बजे फिर उसकी मुलायम गांड का अहसास करके फिर लण्ड खड़ा हो गया।

फिर मैंने बाइक उठाई और बाहर चला गया.

कोई लड़की नहीं मिली. फिर कुछ देर बाद और औरत दिखी। उसकी उम्र 30-32 होगी।

उसके सामने मैंने बाइक रोक दी और वो आकर बैठ गयी।

पास में ही एक गोदाम है जहां रात को कोई ज्यादा आता नहीं था। वहीं मैं उसे थोड़ा और अंदर ले गया.

जाते ही उसने निक्कर में से लण्ड निकाल लिया और कहा- ये तो पहले से ही खड़ा है।

मैंने भी कह दिया- तुम्हारी गर्मी से ही खड़ा हो गया है।

यह सुन कर वो खुश हो गयी और घुटनों के बल बैठ के लण्ड चाटने लगी। आंड से लेकर लण्ड चाटने के बाद मुँह में लेकर चूसने लगी तो कभी आंड चूसती.

फिर उसने अपना कुर्ता उतार दिया और ब्रा ऊपर करके दोनों मम्मों के बीच लण्ड रगड़ने लगी। फिर मैंने उसके मुँह में अपना लंड डाल दिया। दस मिनट उसको लंड चुसाने के बाद उसको खड़ी किया.

वो दीवार के सहारे हाथ रख के खड़ी हो गयी और साड़ी उठाने लगी। मैंने भी उसको थोड़ा पीछे खींचा और साड़ी को कमर के ऊपर कर दी। उसने कच्छी नहीं पहन रखी थी. मैंने

अपना लंड उसके चूत पे रखा और सहलाने लगा ।

तभी ध्यान आया की साला जल्दी में निरोध तो लाया ही नहीं. तभी उसके गांड का छेद मुझे दिखाई दिया जो हल्की रोशनी में मेरे लंड को बुला रहा था । मैंने भी कुछ कहे और कुछ पूछे बिना अपना लंड उसकी गांड में घुसा दिया ।

उसकी गांड का छेद इतना टाइट नहीं था, शायद वह पहले भी कई लंड गांड में ले चुकी होगी.

लेकिन अभी टोपे से आगे ही गया होगा कि उसकी आवाज निकली- अरे बाबा रे ।

उसने बस ये कहा- शाहब, मैं मना थोड़ी करती ... बस एक बार बता देते.

इतना सुनते ही मैंने एक बार और धक्का दिया और आधा लंड अंदर चला गया । मैं वहीं थोड़ी देर अंदर बाहर करता रहा फिर थोड़ा धक्का दे देता ।

ऐसा करते करते 15 मिनट हो गए और उसकी गांड में अब मेरा लंड पूरा चला गया था ।

अब बस कभी तेज़ तो कभी धीरे उसकी गांड मारने में लगा हुआ था. मैं कभी उसके बाल पकड़ लेता तो कभी उसकी चूची दबा दबा के उसकी गांड चोदता. 20 मिनट बाद उसकी गांड में ही अपना वीर्य गिरा दिया ।

फिर उसने अपने कपड़े ठीक किये.

मैंने भी उसकी साड़ी में ही लंड साफ़ किया और उसे पैसे दे के उसे जहाँ से लाया था, वहीं छोड़ दिया ।

अगली सुबह छाया की माँ गीता घर पे अकेली थी और उसका टीवी नहीं चल रहा था ।

उसको मैं दिखाई दे गया तो मुझे आवाज लगा के बुला लिया ।

फिर मैंने जाकर देखा और टीवी ठीक कर दिया ।

फिर वो मुझे बैठा के कोल्ड ड्रिंक लायी और साली ने निक्कर के ऊपर गिरा दिया और तौलिये से निक्कर के ऊपर पौँछने लगी। मेरे लण्ड में सनसनी फैल गयी। गीता ने कहा- थोड़ी देर उतार के रख दे, सूख जाएगा।

मैंने मना किया पर वो जोर देने लगी. फिर मुझे बताना पड़ा कि मैंने अंदर कच्छा नहीं पहना।

यह सुनते ही गीता आंटी हंसने लगी और बेड पे लेट गयी।

फिर थोड़ी देर बाद वो नहाने जाने लगी और कहा- तुम बैठो, मैं अभी आती हूँ। वो नहाने चली गयी।

कुछ देर बाद मुझे ख्याल आया कि वहाँ कोई नहीं है, क्यों ना बाथरूम के छेद से या किसी दरार से अंदर देखूँ।

मैंने दरवाजे के पास जाकर देखा कुछ भी हल्का सा भी नहीं दिखाई दे रहा था।

फिर मैं वापस अंदर जाने लगा कि तभी मुझे ख्याल आया कि एक साइड में खिड़की भी है। मैंने वहाँ जाकर देखा तो खिड़की खुली सी लगी. मैंने हल्का सा उंगली से खिड़की को आगे की तरफ धक्का दिया और किस्मत साथ दे गयी। अब मैं पूरी तरह से उसको देख सकता था।

गीता आंटी नंगी बैठ कर कच्छी धो रही थी शायद धोने के बाद नहाती।



Nangi Aunty Bathroom

खैर आखिर वो मौका आ गया वो बैठे बैठे ही अपने ऊपर पानी गिराने लगी फिर साबुन लगाना शुरू किया। आंटी की चूचियाँ ज्यादा बड़ी नहीं थी पर मस्त थी, उनके ऊपर से उसके काले रंग के नुकीले चूचुक गज़ब थी।

फिर उसने अपने मुँह पर साबुन लगाया और खड़ी हो गयी। उसकी गांड की गोलाई सामान्य थी पर गांड का छेद देखने से लग रहा था कि अनछुई है। मुँह पे साबुन अभी लगा ही था और वो घूम गयी और वो पूरे बदन में साबुन लगा रही थी।

मेरी नज़र अब आंटी की चूत पे गयी जहाँ उसके हल्के बाल दिखाई दे रहे थे, ऐसा लग रहा था कि कुछ दिन पहले ही उसने बाल साफ़ किये थे. तभी याद आया कुछ समय पहले उनकी शादी की सालगिरह थी. शायद उसी टाइम उन्होंने अपनी चूत साफ़ की होगी।

चोर की चोरी कभी न कभी तो पकड़ी जाती है. ऐसा ही मेरे साथ हुआ ... मैंने भी ध्यान नहीं दिया कि सामने एक छोटा सा शीशा लगा हुआ है. उन्होंने अब अपना मुँह धो लिया

था. तभी उनकी नज़र शीशे पर पड़ी जिसमें मेरे चेहरा थोड़ा सा दिखाई दे रहा था.

तो दोस्तो, कैसी लगी आपको इतनी कहानी।

क्या हुआ उसके बाद ? जानने के लिए और अपना लंड खड़ा करने और चूत गीली करने के लिए अगले भाग का इंतज़ार कीजिये।

veerudada33@gmail.com

Other stories you may be interested in

न्यूज़ एंकर के साथ बितायी रात-2

कहानी का पहला भाग : न्यूज़ एंकर के साथ बितायी रात-1 अब मैंने एक झटके में उसकी ब्रा के हुक खोल दिये। मुश्किल से 32 साइज के उसके मुम्मे थे कच्चे अमरूद की तरह जो पैडेड ब्रा की वजह से 34 [...]

[Full Story >>>](#)

मेरी सहेली की चुदाई मेरे जीजाजी से

हैलो फ्रेंडज़, आपको मैंने अपनी पिछली कहानी सहेली को सेक्स का पहला पाठ पढ़ाया में मेरी सहेली के बारे में बताया था कि सेक्स के मामले में मेरी सहेली सुमन बिल्कुल अनाड़ी थी. एक दिन मैं उसके साथ उसके घर [...]

[Full Story >>>](#)

न्यूज़ एंकर के साथ बितायी रात-1

भाइयों, भाभियों एवं सभी पाठक पाठिकाओं को प्रियम का बहुत बहुत प्यार। क्षमा चाहता हूँ कि कुछ पारिवारिक जिम्मेदारियों की वजह से बहुत दिनों के बाद में अन्तर्वासना पर आपके सम्मुख एक नयी कहानी लेकर आ पाया हूँ। जो पाठक [...]

[Full Story >>>](#)

विदेशी लंड से लहंगा उठाकर चुदी

दोस्तो, मैं सपना जैन एक बार फिर से हाजिर हूँ एक नई कहानी लेकर. अपनी पिछली कहानी टीचर से गांड मरवाकर नम्बर लिए मैंने आपको बताया था कि कैसे मेरे टीचर ने मेरी गांड मार ली थी. वह मेरी [...]

[Full Story >>>](#)

पड़ोसन भाभी, उनकी सहेली और बेटा को चोदा-3

इस सेक्स कहानी में अब तक आपने पढ़ा कि मैं पिकी की कुंवारी बुर में लंड पेल कर चुदाई का मजा ले चुका था. पिकी चुद कर चली गई थी. उसके जाने के बाद मुझे शान्ति भाभी की पहली चुदाई [...]

[Full Story >>>](#)

